हिन्दी संगोष्ठी का प्रतिवेदन

हिन्दी चेतना मास का समापन समारोह सह संगोष्ठी 16.10.2014 को प्रातः 10 बजे से बीज अनुसंधान निदेशालय, मऊ के सभागार में आयोजित किया गया । कार्यक्रम का स्वागत भाषण परियोजना निदेशक डॉ० एस० राजेंद्र प्रसाद (परियोजना निदेशक), बीज अनुसंधान निदेशालय, मऊ द्वारा किया गया । अपने उदघाटन भाषण में उन्होंने बीज अनुसंधान निदेशालाय द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के कार्यों की सराहना की एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा कृषकों के सामाजार्थिक उत्थान के लिए किये जाने वाले कार्यों की सराहना की । डॉ० प्रसाद ने हिन्दी भाषा की लोकप्रियता में मीडिया तथा फिल्मों की भूमिका को रेखांकित किया तथा हिंदी को सरल तथा आमजन की भाषा बनाने पर जोर दिया ।

तत्पश्चात बीज अनुसंधान निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव श्री अजय कुमार सोनी द्वारा निदेशालय में हिन्दी भाषा के उन्नयन के लिए किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी । संगोष्ठी को डॉ० टी० एन० तिवारी, सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बी०अनु०नि०, मऊ, डॉ० ए० के० सिन्हा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, बी०अनु०नि०, मऊ तथा डॉ० गोविन्द पाल, प्रभारी वित्त एवं लेखाधिकारी, बी० अनु० नि०, मऊ द्वारा भी सम्बोधित किया गया ।

इसके उपरान्त कार्यक्रम में आमंत्रित विशिष्ट अतिथि डॉ० अरुण कुमार शर्मा (निदेशक), राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो, मऊ ने केंद्र सरकार द्वारा हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रारंभ की गयी विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी । डॉ० शर्मा ने राष्ट्रीय एकता के निर्माण में हिन्दी भाषा के योगदान पर भी विस्तार से प्रकाश डाला ।

अपने संबोधन के उपरांत डॉ० शर्मा ने हिन्दी चेतना मास के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र एवं हिन्दी भाषा की एक-2 लोकप्रिय पुस्तक देकर सम्मानित किया गया।

समापन सम्मोह के अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ॰ मदन कुमार, (सदस्य), हिन्दी समिति, बी॰अनु॰नि॰, मऊ ने बताया कि हिन्दी ही वह भाषा है जिसने भारत जैसे बहुभाषी तथा बहुसांस्कृतिक देश में विविधता में एकता की स्थापना की है। भारत की 22 भाषाओं को संविधान द्वारा आधिकारिक भाषा का दर्ज़ा दिया गया है किन्तु हिंदी ही वह एकमात्र भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा का दर्ज़ा दिया गया, इसका उल्लेख संविधान के पैराग्राफ 343(1) में दर्ज है। उन्होंने कृषकों के साथ अपने अनुभवों को साझा करते हुए लोकभाषा के रूप में हिन्दी की उपयोगिता समझाई।

धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संगोष्ठी तथा हिन्दी चेतना मास के विधिवत समापन की घोषणा की गयी।